शोध नैतिकता सिद्धांत :, चुनौतियाँ और समकालीन परिप्रेक्ष्य

डॉ. मंजू सिंह ठाकुर, विभागाध्यक्ष (योग एवं दर्शन विभाग)
अग्रसेन महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
ईमेल – geetanur.manju0108@gmail.com

शोध सार

शोध में नैतिकता का होना अत्यंत आवश्यक है। प्रस्तुत शोध पत्र भी अनुसंधान के क्षेत्र में नैतिक सिद्धांतों की क्या भूमिका हो सकती है, उसका विश्लेषण करता है। शोध नैतिकता किसी भी अनुसंधान में न केवल डेटा की शुद्धता सुनिश्चित करती है, अपितु अनुसंधान के प्रति विश्वास भी बनाए रखती है। साथ ही, प्रतिभागियों के अधिकारों की रक्षा तथा शोध क्षेत्र एवं समाज में विज्ञान के प्रति विश्वास को भी बनाए रखती है।

शोध नैतिकता से तात्पर्य उन नियमों और दिशा-निर्देशों के समूह से है, जो एक शोधकर्ता को सही और गलत के मध्य भेद करना सिखाते हैं। शोध नैतिकता में हम प्रयास करते हैं कि किसी भी अन्य व्यक्ति के विचारों, उसके शब्दों या परिणामों को बिना उचित श्रेय दिए उपयोग में न लाएँ अथवा अपने नाम से प्रस्तुत न करें।

प्रस्तुत शोध में हमने साहित्यिक चोरी, सूचित सहमति और डेटा हेरफेर जैसे कई प्रमुख मुद्दों पर विस्तार से प्रकाश डाला है।

मूल शब्द- अनुसंधान, रक्षा, विज्ञान, नैतिकता, विश्वास।

प्रस्तावना

अनुसंधान से तात्पर्य **"ज्ञान की खोज"** से है, किंतु यह खोज किसी भी कीमत पर नहीं की जा सकती। शोध नैतिकता से तात्पर्य उन नियमों एवं दिशा-निर्देशों के समूह से है, जो शोधकर्ता को सही और गलत के मध्य भेद करना सिखाते हैं। 20वीं शताब्दी की कुछ विवादास्पद घटनाओं (जैसे टस्केगी तथा सिफिलिस अध्ययन) के बाद शोध के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कठोर नैतिक मानकों की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी। मानव ज्ञान के विकास का एक महत्वपूर्ण माध्यम अनुसंधान है। किसी भी शोध की गुणवत्ता केवल उसके निष्कर्षों से ही नहीं, बल्कि उसके नैतिक आधार से भी निर्धारित होती है। शोध नैतिकता उन सिद्धांतों एवं मानकों का समूह है, जो अनुसंधान कार्य को सत्यनिष्ठ, निष्पक्ष, पारदर्शी एवं उत्तरदायी बनाते हैं। वर्तमान समय में शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, योग एवं दर्शनशास्त्र जैसे विभिन्न क्षेत्रों में तीव्र गति से बढ़ रहे अनुसंधानों ने नैतिकता के महत्व को और अधिक बढ़ा दिया है। यदि अनुसंधान में शोध नैतिकता का पालन न किया जाए, तो साहित्यिक चोरी, आँकड़ों की हेराफेरी, मानव अधिकारों का उल्लंघन तथा वैज्ञानिक धोखाधड़ी जैसी गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

एक उच्च स्तरीय शोध तभी सार्थक माना जाता है, जब वह नैतिक मूल्यों पर आधारित हो। शोध के माध्यम से हम नवीन ज्ञान की खोज, समस्याओं का समाधान तथा समाज के विकास हेतु उपयोगी सिद्धांतों का निर्माण करते हैं। शोध नैतिकता उन नैतिक नियमों एवं सिद्धांतों का समुच्चय है, जिनका पालन एक शोधकर्ता अनुसंधान करते समय करता है। यह सुनिश्चित करती है कि शोध के कारण किसी व्यक्ति, समुदाय अथवा समाज को किसी प्रकार की हानि न पहुँचे। इसमें सत्यता, निष्पक्षता, गोपनीयता, ईमानदारी तथा उत्तरदायित्व जैसे महत्वपूर्ण तत्व सम्मिलित होते हैं।

वर्तमान समय प्रतिस्पर्धा का युग है। प्रकाशन का दबाव शोधकर्ताओं पर निरंतर बना रहता है, जिसके कारण कई बार वे अनैतिक गतिविधियों की ओर प्रवृत्त हो जाते हैं, जैसे आँकड़ों में हेरफेर करना, झूठे निष्कर्ष प्रस्तुत करना, साहित्यिक चोरी करना आदि। ऐसी परिस्थितियों में शोध

नैतिकता का महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि यह न केवल अनुसंधान की विश्वसनीयता को बनाए रखती है, बल्कि वैज्ञानिक समुदाय तथा समाज के मध्य विश्वास को भी सुदृढ़ करती है।

शोध नैतिकता की अवधारणा

शोध का अर्थ किसी विषय का व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक अध्ययन करना है। शोध नैतिकता दो शब्दों से मिलकर बनी है— **शोध** तथा **नैतिकता**। इस प्रकार शोध नैतिकता का तात्पर्य उन नैतिक मानकों से है, जो अनुसंधान प्रक्रिया को सत्यनिष्ठ, पारदर्शी एवं उत्तरदायी बनाते हैं। यह शोधकर्ता को निर्देश देती है कि वह अपने शोध कार्य में ईमानदारी, निष्पक्षता तथा उत्तरदायित्व बनाए रखे। विभिन्न विद्वानों ने शोध नैतिकता को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है—

1. **Resnik के अनुसार**- *"शोध नैतिकता ऐसे मानकों का समूह है, जो अनुसंधान में ईमानदारी और उत्तरदायित्व सुनिश्चित करते हैं।"*
2. **Shamoo एवं Resnik के अनुसार**- *"शोध नैतिकता वैज्ञानिक अनुसंधान में सही आचरण का मार्गदर्शन करती है।"*

शोध नैतिकता के मूलभूत सिद्धांत

1. **ईमानदारी (Honesty)**- अनुसंधान में डेटा, परिणामों एवं विधियों की रिपोर्टिंग में सत्यनिष्ठा बनाए रखना आवश्यक है। शोध कार्य में किसी भी प्रकार की गलत जानकारी या तथ्य छिपाने से बचना चाहिए।
2. **वस्तुनिष्ठता (Objectivity)**- अनुसंधान में डेटा संग्रह, विश्लेषण, प्रयोगात्मक डिजाइन तथा निष्कर्षों की व्याख्या करते समय पक्षपात से बचना चाहिए।
3. **गोपनीयता (Confidentiality)**- अनुसंधान में प्रतिभागियों की निजी जानकारी एवं संवेदनशील डेटा को सुरक्षित रखना आवश्यक है। शोधकर्ता का दायित्व है कि वह गोपनीय सूचनाओं का दुरुपयोग न होने दे।

शोध नैतिकता की आवश्यकता

यह एक विचारणीय प्रश्न है कि अनुसंधान के क्षेत्र में शोध नैतिकता की आवश्यकता क्यों पड़ती है। इसके कई महत्वपूर्ण कारण हैं, जिनके माध्यम से अनुसंधान कार्य को उत्कृष्टता एवं विश्वसनीयता प्रदान की जा सकती है—

1. **शोध की विश्वसनीयता बनाए रखना**- किसी भी शोध कार्य में नैतिकता का पालन करने से शोध की प्रामाणिकता एवं विश्वसनीयता बढ़ती है।
2. **समाज का विश्वास बनाए रखना**- यदि अनुसंधान नैतिक मूल्यों के अनुरूप किया जाए, तो समाज का विज्ञान एवं अनुसंधान के प्रति विश्वास सुदृढ़ होता है।
3. **प्रतिभागियों की सुरक्षा**- शोध नैतिकता प्रतिभागियों के अधिकारों, सम्मान तथा सुरक्षा की रक्षा सुनिश्चित करती है।
4. **वैज्ञानिक प्रगति को बढ़ावा देना**- नैतिक रूप से किए गए शोध से प्राप्त निष्कर्ष समाज एवं विज्ञान दोनों के लिए उपयोगी एवं लाभकारी सिद्ध होते हैं।
5. **साहित्यिक चोरी को रोकना**- अनुसंधान में नैतिकता का पालन साहित्यिक चोरी (Plagiarism) को रोकने में सहायता करता है तथा शोधकर्ताओं को मौलिक कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

शोध नैतिकता के प्रकार

शोध नैतिकता के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं-

1. **मानव अनुसंधान नैतिकता (Human Research Ethics)**- इस प्रकार की नैतिकता मानव प्रतिभागियों से संबंधित अनुसंधानों में लागू होती है। इसमें प्रतिभागियों की **सूचित सहमति (Informed Consent)** प्राप्त करना आवश्यक होता है।
2. **पशु अनुसंधान नैतिकता (Animal Research Ethics)**- ऐसे अनुसंधान, जिनमें पशुओं पर प्रयोग किए जाते हैं, उनमें पशुओं के प्रति संवेदनशीलता, कल्याण एवं सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक होता है।
3. **प्रकाशन नैतिकता (Publication Ethics)**- इसके अंतर्गत शोध-पत्रों एवं पुस्तकों के प्रकाशन में मौलिकता, उचित संदर्भ, पारदर्शिता तथा लेखकत्व संबंधी नैतिक मानकों का पालन करना आवश्यक होता है।
4. **डेटा प्रबंधन नैतिकता (Data Management Ethics)**- किसी भी शोध कार्य में डेटा का सुरक्षित संग्रहण, संरक्षण एवं उपयोग करना तथा उसमें किसी प्रकार की हेराफेरी न करना शोध नैतिकता का महत्वपूर्ण अंग है।

शोध में अनैतिक आचरण

वर्तमान समय में शोधार्थियों एवं शोधकर्ताओं के बीच शोध आलेखों, पुस्तकों तथा विभिन्न विषयों पर शोध कार्यों के प्रकाशन को लेकर एक प्रकार की प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है। इसके परिणामस्वरूप शोध के क्षेत्र में उच्च स्तरीय एवं गुणवत्तापूर्ण प्रकाशनों की कमी देखने को मिल रही है। इसका एक प्रमुख कारण शोध में होने वाले अनैतिक आचरण हैं, जो निम्नलिखित हैं—

1. **साहित्यिक चोरी (Plagiarism)**- साहित्यिक चोरी से तात्पर्य दूसरों के विचारों, लेखन या शोध निष्कर्षों को बिना उचित संदर्भ दिए अपने कार्य में उपयोग करना है।
2. **डेटा की हेराफेरी (Data Manipulation)**- यदि किसी शोध में जानबूझकर आँकड़ों में परिवर्तन कर शोध परिणामों को बदला जाता है अथवा उन्हें गलत रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तो यह गंभीर अनैतिक आचरण माना जाता है।
3. **झूठे निष्कर्ष (False Conclusions)**- इसके अंतर्गत ऐसे निष्कर्ष प्रस्तुत किए जाते हैं, जिनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं होता अथवा जो वास्तविक तथ्यों से मेल नहीं खाते।
4. **फर्जी शोध (Fabricated Research)**- वर्तमान समय में कुछ शोध कार्य काल्पनिक आँकड़ों के आधार पर तैयार किए जाते हैं तथा उन्हें वास्तविक शोध के रूप में प्रकाशित कर दिया जाता है। यह शोध नैतिकता का गंभीर उल्लंघन है।
5. **पक्षपातपूर्ण शोध (Biased Research)**- कई बार व्यक्तिगत हित, विचारधारा अथवा अन्य कारणों से शोधकर्ता निष्पक्षता खो देता है, जिससे शोध परिणाम प्रभावित होते हैं और उनकी विश्वसनीयता कम हो जाती है।

शोध नैतिकता के क्षेत्र में चुनौतियाँ

एक ओर जहाँ शोध में नैतिकता की आवश्यकता पर बल दिया जाता है, वहीं दूसरी ओर इसके समक्ष अनेक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। प्रमुख चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं-

1. **शोध प्रकाशन का दबाव**- वर्तमान समय में शोध-पत्रों के प्रकाशन की प्रतिस्पर्धा अत्यधिक बढ़ गई है, जिसके कारण कई बार शोधकर्ता अनैतिक गतिविधियों की ओर प्रवृत्त हो जाते हैं।
2. **तकनीकी दुरुपयोग**- डिजिटल तकनीकों और इंटरनेट के बढ़ते उपयोग से शोध सामग्री की नकल करना आसान हो गया है, जिससे साहित्यिक चोरी की घटनाओं में वृद्धि हुई है।
3. **वित्तीय हित (Financial Interests)**- कई बार आर्थिक लाभ या प्रायोजकों के दबाव के कारण शोध की निष्पक्षता प्रभावित हो जाती है, जिससे परिणामों की विश्वसनीयता कम हो सकती है।
4. **जागरूकता की कमी**- नवीन शोधार्थियों को प्रायः शोध नैतिकता, संदर्भ लेखन तथा प्रकाशन संबंधी नियमों की पर्याप्त जानकारी नहीं होती, जिसके कारण अनजाने में नैतिक त्रुटियाँ हो जाती हैं।

5. **राजनीतिक एवं सामाजिक दबाव**- कुछ अनुसंधानों में राजनीतिक, सामाजिक अथवा संस्थागत दबाव भी शोध की निष्पक्षता एवं स्वतंत्रता को प्रभावित करते हैं।

शोध नैतिकता को सुदृढ़ बनाने के उपाय

1. **मौलिक शोध को प्रोत्साहन**- शोध की गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए मौलिक एवं नवाचारी शोध कार्यों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
2. **डेटा प्रबंधन के स्पष्ट नियम**- डेटा संग्रहण, संरक्षण एवं उपयोग के लिए कठोर एवं पारदर्शी नियम बनाए जाने चाहिए।
3. **पारदर्शिता को बढ़ावा**- अनुसंधान की संपूर्ण प्रक्रिया में पारदर्शिता बनाए रखना आवश्यक है, जिससे शोध की विश्वसनीयता बढ़ती है।
4. **नैतिक उल्लंघनों पर दंडात्मक प्रावधान**- शोध के नैतिक नियमों का उल्लंघन करने वालों के लिए उचित दंड एवं अनुशासनात्मक कार्रवाई का प्रावधान होना चाहिए।
5. **प्लेज़रिज़्म जाँच को अनिवार्य बनाना**- प्रत्येक शोध-पत्र, शोध-प्रबंध एवं प्रकाशन में साहित्यिक चोरी की जाँच अनिवार्य रूप से की जानी चाहिए।
6. **शोध नैतिकता संबंधी प्रशिक्षण**- प्रत्येक शोधार्थी एवं शोधकर्ता को शोध नैतिकता, संदर्भ लेखन एवं प्रकाशन मानकों का नियमित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
7. **नैतिक समितियों का गठन**- सभी विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों एवं शोध संस्थानों में शोध नैतिकता की निगरानी हेतु नैतिक समिति (Ethics Committee) का गठन किया जाना चाहिए।

भारतीय संदर्भ में शोध नैतिकता

शोध नैतिकता का महत्व भारत में प्राचीन काल से ही स्वीकार किया जाता रहा है। यदि हम भारतीय दर्शन पर दृष्टिपात करें, तो सत्य, अहिंसा, अस्तेय (चोरी न करना) तथा ईमानदारी जैसे मूल्यों को सदैव उच्च स्थान प्रदान किया गया है। ये नैतिक आदर्श आज भी अनुसंधान कार्यों के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में प्रासंगिक हैं।

आधुनिक समय में **भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICMR)** ने चिकित्सा अनुसंधान के क्षेत्र में शोध नैतिकता के लिए विभिन्न दिशा-निर्देश जारी किए हैं। इसी प्रकार **विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC)** ने भी अनुसंधान कार्यों में नैतिकता बनाए रखने हेतु अनेक नियम एवं विनियम निर्धारित किए हैं। विश्वविद्यालयों एवं उच्च शिक्षण संस्थानों में साहित्यिक चोरी (Plagiarism) को रोकने के लिए सॉफ्टवेयर आधारित जाँच प्रणाली लागू की गई है, जिससे शोध कार्यों की मौलिकता सुनिश्चित की जा सके।

शिक्षा के क्षेत्र में शोध नैतिकता का विशेष महत्व है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को प्रारंभ से ही प्रदान की जानी चाहिए। महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में शोध नैतिकता से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएँ तथा अभिमुखीकरण कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाने चाहिए। वर्तमान समय में उच्च शिक्षा संस्थानों में यूजीसी द्वारा प्लेज़रिज़्म रोकने के लिए बनाए गए नियमों के कारण शोध की गुणवत्ता, विश्वसनीयता एवं मौलिकता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

शोध नैतिकता की चुनौतियाँ

अनुसंधान की प्रक्रिया में शोध नैतिकता के समक्ष अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं, जिनमें प्रमुख निम्नलिखित हैं-

1. **तकनीकी दुरुपयोग**- वर्तमान समय में इंटरनेट एवं डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता के कारण सामग्री की प्रतिलिपि)Copy-Paste) करना अत्यंत सरल हो गया है। इसके परिणामस्वरूप साहित्यिक चोरी की घटनाओं में वृद्धि हुई है।

2. **जागरूकता की कमी**- अनेक शोधार्थियों को शोध नैतिकता, संदर्भ लेखन तथा प्रकाशन संबंधी नियमों की पूर्ण जानकारी नहीं होती। इस जागरूकता के अभाव में अनजाने में भी नैतिक त्रुटियाँ हो जाती हैं तथा साहित्यिक चोरी को बढ़ावा मिलता है।
3. **वित्तीय हित**- कई बार आर्थिक लाभ, प्रायोजन)Funding) अथवा संस्थागत दबाव के कारण अनुसंधान की निष्पक्षता प्रभावित हो जाती है। ऐसी स्थिति में शोध के परिणाम पक्षपातपूर्ण हो सकते हैं।
4. **प्रकाशन का दबाव**- वर्तमान समय में शोध पत्र-पत्र प्रकाशित करने की प्रतिस्पर्धा अत्यधिक बढ़ गई है। अधिक से अधिक शोध-प्रकाशित करने की होड़ में कुछ शोधकर्ता नैतिक मानकों की उपेक्षा कर देते हैं, जिससे शोध की गुणवत्ता प्रभावित होती है।
5. **राजनीतिक एवं सामाजिक दबाव**- कुछ अनुसंधानों में राजनीतिक, सामाजिक अथवा वैचारिक दबाव भी कार्य करते हैं, जो शोध की स्वतंत्रता एवं निष्पक्षता को प्रभावित कर सकते हैं। इससे शोध के निष्कर्षों की वस्तुनिष्ठता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

शोध नैतिकता को सुदृढ़ता प्रदान करने के उपाय

1. **अनुसंधान कार्य में पारदर्शिता लानी चाहिए**- शोध की प्रत्येक प्रक्रिया, डेटा संग्रहण, विश्लेषण तथा निष्कर्षों को स्पष्ट एवं पारदर्शी रूप से प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
2. **अनैतिक कृत्यों पर कठोर दंड का प्रावधान होना चाहिए**- जो भी शोधार्थी अथवा शोधकर्ता अनैतिक गतिविधियों में संलग्न पाए जाएँ, उनके लिए उचित एवं कठोर दंडात्मक व्यवस्था सुनिश्चित की जानी चाहिए।
3. **डेटा प्रबंधन हेतु सुव्यवस्थित नियम बनाए जाने चाहिए**- डेटा के संग्रहण, संरक्षण, उपयोग एवं साझा करने के लिए स्पष्ट एवं प्रभावी नियम निर्धारित किए जाने चाहिए।
4. **सभी शोधार्थियों को नैतिकता संबंधी प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए**- शोध नैतिकता, संदर्भ लेखन, प्रकाशन मानकों एवं डेटा प्रबंधन के संबंध में नियमित प्रशिक्षण एवं कार्यशालाएँ आयोजित की जानी चाहिए।
5. **केवल मौलिक शोध को ही प्रकाशित किया जाना चाहिए**- शोध कार्यों की मौलिकता सुनिश्चित कर साहित्यिक चोरी एवं पुनरावृत्त प्रकाशन को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।
6. **प्लेज़रिज़्म जाँच अनिवार्य की जानी चाहिए**- प्रत्येक शोध-पत्र, शोध-प्रबंध एवं प्रकाशन को प्रकाशित करने से पूर्व प्लेज़रिज़्म परीक्षण से गुजरना आवश्यक होना चाहिए।
7. **सभी शोध संस्थानों में नैतिक समिति का गठन किया जाना चाहिए।**- शोध कार्यों की निगरानी एवं नैतिक मानकों के पालन हेतु प्रत्येक संस्थान में नैतिक समिति (Ethics Committee) की स्थापना की जानी चाहिए।

समकालीन परिप्रेक्ष्य में शोध नैतिकता

आधुनिक युग डिजिटल युग के रूप में जाना जाता है। अनुसंधान के क्षेत्र में डिजिटल प्रौद्योगिकी के बढ़ते उपयोग के कारण शोध नैतिकता की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence), जैव-प्रौद्योगिकी (Biotechnology), डेटा विज्ञान (Data Science) तथा सोशल मीडिया आधारित अनुसंधानों में गोपनीयता एवं डेटा सुरक्षा से संबंधित अनेक नई चुनौतियाँ सामने आई हैं।

ऑनलाइन आधारित शोध कार्यों में प्रतिभागियों की व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा अत्यंत आवश्यक हो गई है। डिजिटल माध्यमों से एकत्रित डेटा के दुरुपयोग, अनधिकृत पहुँच तथा गोपनीयता के उल्लंघन की संभावनाएँ बढ़ी हैं। इसी प्रकार कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित अनुसंधानों में डेटा के दुरुपयोग, एल्गोरिथ्मिक पक्षपात (Algorithmic Bias) तथा पारदर्शिता की समस्याएँ भी उभरकर सामने आ रही हैं।

इन परिस्थितियों में शोधकर्ताओं के लिए यह आवश्यक हो गया है कि वे तकनीकी सुविधाओं का उपयोग करते समय नैतिक मानकों का पूर्णतः पालन करें। वर्तमान समय में गुणवत्तापूर्ण, विश्वसनीय एवं उत्तरदायी अनुसंधान के लिए शोध नैतिकता का पालन अनिवार्य हो गया है।

निष्कर्ष

मानव जीवन में ज्ञान के विस्तार का एक महत्वपूर्ण माध्यम अनुसंधान है। प्राचीन काल से ही मनुष्य सत्य एवं ज्ञान की खोज के लिए विभिन्न प्रकार के अनुसंधान करता आया है। वर्तमान समय में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास ने शोध कार्यों को नई दिशा प्रदान की है। किसी भी शोध कार्य की उत्कृष्टता और सफलता केवल उसके परिणामों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि वह किस प्रकार और किन नैतिक मानकों के अंतर्गत संपादित किया गया है।

शोध कार्य में नैतिक मूल्यों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यदि नैतिक सिद्धांतों की उपेक्षा करते हुए अनुसंधान किया जाए, तो उसका नकारात्मक प्रभाव न केवल शोध की गुणवत्ता पर पड़ता है, बल्कि समाज, विज्ञान एवं ज्ञान की विश्वसनीयता भी प्रभावित होती है। इसलिए शोध में सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता, पारदर्शिता, गोपनीयता एवं उत्तरदायित्व जैसे नैतिक मूल्यों का पालन अनिवार्य है।

शोध नैतिकता वह प्रक्रिया है, जो शोधकर्ता को सही एवं गलत के मध्य अंतर स्पष्ट करती है तथा उसे ईमानदारी एवं निष्पक्षता के साथ अनुसंधान कार्य संपादित करने के लिए प्रेरित करती है। अतः उत्कृष्ट, विश्वसनीय एवं समाजोपयोगी अनुसंधान के लिए शोध नैतिकता का पालन प्रत्येक शोधकर्ता का मूल दायित्व होना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. American Psychological Association. (2020). *Publication Manual of the American Psychological Association* (7th ed.). APA Publishing.
2. Indian Council of Medical Research. (2017). *National Ethical Guidelines for Biomedical and Health Research Involving Human Participants*. ICMR.
3. Resnik, D. B. (2015). *What Is Ethics in Research and Why Is It Important?* National Institute of Environmental Health Sciences.
4. Shamoo, A. E., & Resnik, D. B. (2015). *Responsible Conduct of Research* (3rd ed.). Oxford University Press.
5. Singh, Y. K. (2011). *Fundamentals of Research Methodology and Statistics*. New Age International Publishers.
6. University Grants Commission. (2018). *Promotion of Academic Integrity and Prevention of Plagiarism in Higher Educational Institutions Regulations*. UGC.
7. Wiles, R. (2013). *What Are Qualitative Research Ethics?* Bloomsbury Academic.